International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(3): 04-06

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3): 04-06
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 27-02-2015
Accepted: 16-03-2015

डॉ सुलेखा देवी
एसोसिएट प्रोफेसरए
संस्कृत विभाग,
टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुर
ति.माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
बिहार

Correspondence
डॉ सुलेखा देवी
एसोसिएट प्रोफेसरए
संस्कृत विभाग,
टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुर
ति.माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर, बिहार

धार्मिक सहिष्णुताः एक विवेचन

डॉ सुलेखा देवी

धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत कोशों में इसकी व्युत्पत्ति यों दी गई है – ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा, तात्पर्य यह कि जो लोक को धारण करता है, वह धर्म है। लोक में व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व सभी समाविष्ट हैं। इसलिए जो इन सभी को स्वस्थ, स्थिर व पवित्र बनाए रखता है, वही धर्म है। महर्षि वेदव्यास ने निम्नलिखिल श्लोक में स्पष्टतः कहा है –

धारणाद् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।
यः स्याद् धारण – सुयंक्तः स धर्म इति निश्चयः।।

–महाभारत , शान्ति पर्व 1081।।

भाव यह है कि धर्म को धर्म इस कारण कहते हैं कि वह प्रजाओं को धारण करता है।

अंग्रेजी भाषा में धर्म को त्मसपहपवद (रिलीजन) कहते हैं त्मसपहपवद दो शब्दों का संयोजन है : श्त्मश और स्महमतम (लिजेयर)। श्स्महमतमश का अर्थ होता है – बांधना और श्त्मश शब्द का अर्थ पुनः है। इस प्रकार त्मसपहपवद शब्द का अर्थ हुआ पुनः बांधना। तात्पर्य यह है कि रिलिजन (धर्म) वह है, जो आत्मा को परमात्मा वा अन्य किसी इष्टदेव से पुनः बांध देता है, मानो परमात्मा से पृथक् हो चुकी हुई आत्मा को 'धर्म' पुनः उससे बांध देता है।

सहिष्णु (सह+इष्णुच्) से तल् प्रत्यय और स्त्री. में टाप् प्रत्यय लगकर सहिष्णुता बनता है। जिसका अर्थ होता हे – सहनशील, क्षमाशीलता। इस प्रकार 'धार्मिक सहिष्णुता' से तात्पर्य है – सब धर्मों को सहन करने की क्षमता। अभिप्राय यह कि विभिन्न धर्मों के प्रति आदर एवं प्रेम–भाव का प्रदर्शन करना। यानि किसी अपने से भिन्न धर्मों के अनुयायियों को नहीं सताना और उन्हें अपने धर्मों के पालन करने में पूरी छूट देना। धार्मिक सहिष्णुता धर्म की अध्यात्मिकता की परिपक्वता, बौद्धिक व्यापकता तथा उदारता का परिचायक होती है।

प्रारम्भकाल से ही देखा जाता है कि मानव बिना किसी–न–किसी धर्म के नहीं रह सकता है। ऐसा माना जाता है कि धर्म मानव का स्वभाव गुण है। चूंकि मानवों की सभ्यता, परम्परा तथा संस्कृति एक समान नहीं पायी जाती है, इसलिए गीता के अनुसार विभिन्न प्रकार के व्यक्ति अवश्य होंगे और उनकी मानसिक प्रवृत्ति के अनुसार देवता और तदनुरूप धर्म भी विभिन्न प्रकार के होंगे। अतः मानवों की सभ्यता, परम्परा तथा संस्कृति में विभिन्नता के कारण संसार में विभिन्न प्रकार के धर्म हैं। किन्तु विश्व के विभिन्न धर्मों का सिंहावलोकन करने से विदित होता है कि सभी धर्म मूलतः एक है। एक धर्म का दूसरे धर्म से भेद धर्म के अनावश्यक तथ्यों को लेकर दीखता है। 'डॉ. राधाकृष्णन' ने कहा है कि धर्मो के बीच भेद महत्वपूर्ण इसलिए मालूम होते हैं कि हम अपने धर्मों के मूल सत्य के सम्बन्ध में जानकारी नहीं रखते हैं। सभी धर्म एक ही सत्य का स्पष्टीकरण करते हैं ईश्वर धर्म का केन्द्र बिन्दु है। ईश्वर एक है। एक ही ईश्वर विभिन्न धर्मों का आधार है।

वेदों के अनुसार एक ही सत् है जिसे लोग विभिन्न रुप देते हैं –
एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति।

ऋ0 ।।164।।46

मैक्समूलर ने भी कहा है –
'There is one sppreme God'

राधाकृष्णन ने भी 'East and west in Religion' में कहा है – 'Let us most firmly hold that according to catholic doctrine there is one God, one faith.....

राधाकृष्णन ने पन्द्रहवीं शताब्दी के संत कबीर के विचार का उल्लेख किया है जो ईश्वर की एकता को प्रमाणित करता है। कबीर ने कहा है कि हिन्दू का ईश्वर बनारस में निवास करता माना जाता है। मुसलमान का ईश्वर मक्का में निवास करता माना जाता है। परन्तु जिस ईश्वर ने विश्व की

रचना की है वह शहरों में निवास नहीं कर सकता। हिन्दू और मुसलमान के पिता एक हैं, ईश्वर एक हैं। अन्दरहील ने कहा है कि ब्राह्मण, सूफी और ईसाई में मूलतः कोई अंतर नहीं है। बौद्ध, ईसाई, हिन्दू, मुस्लिम, जैन तथा सिक्ख आदि के धर्म के अनुयायियों का कहना है कि सभी धर्मों का रास्ता अलग है लेकिन मंजिल सबका एक है। सभी धर्म शान्ति, सौहार्द और सहयोग का संदेश देते हैं। उपर्युक्त विवेचना से यह प्रमाणित होता है कि मूलतः सभी धर्म एक एवं समान हैं तो फिर धर्मों में भेद क्यों कर होता है? इसका उत्तर है कि सभी धर्मों में धार्मिक अनुभूतियां होती हैं। यद्यपि धार्मिक अनुभूतियाँ तत्त्वतः समान है। फिर भी बाह्य रुप में उनमें भेद दृष्टिगोचर होता है। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुकूल विभिन्न प्रकार की पूजा की पद्धतियों एवं उपासना को अपनाता है। फलस्वरुप धर्मों के बाह्य एवं क्रियात्मक पहलू में विषमता दिखाई देती हे। यद्यपि ईश्वर एक है फिर भी धार्मिक अनुभूति ईश्वर को भिन्न–भिन्न चित्रित करती है।

धर्म के क्षेत्र में एकता की प्राप्ति परमावश्यक है। संसार में विभिन्न प्रकार के धर्म हैं। उन धर्मों के बीच समन्वय उपस्थित करना ही धार्मिक एकता है। 'सर्वधर्म समन्वय' ही धार्मिक एकता का दूसरा नाम है। धर्मों के बीच एकता विभिन्न धर्मों को एक में मिला देने से संभव नहीं है, बल्कि विभिन्न धर्मों के बीच तर्कसंगत एकता स्थापित करना ही 'धर्म–समन्वय' है। डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Eastern Religions and Western Though' में यह दिखलाने का प्रयास किया है कि सभी धर्म मूलतः एक हैं। उनका यह विचार 'धर्मों का सम्मिलन' Meeting of Religion' नामक अध्याय में पूर्णरुपेण निरुपित है।

उन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच एकता की खोजकर उनके बीच समन्वय करने का प्रयास किया है जो स्तुत्य है। महात्मा जी ने भी धर्म की एकता पर बल दिया है। उन्होंने कहा है 'मैं जैसे गीता में विश्वास करता हूँ, वैसे ही बाइबिल में भी। मैं संसार के सारे महान् धर्मों को अपने धर्म की तरह सच्चा मानता हूँ। ''रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी धर्म की एकता पर बल दिया है। शान्तिनिकेतन में यह लिखा हुआ है कि 'In this place no image is to be adored and no man's faith is to be despised'. विवेकानन्द ने भी धर्म की एकता पर बल दिया है। उन्होंने सभी धर्मों को मूलतः एक माना है। उन्होंने कहा है कि मैं मुसलमानों के मस्जिद में ईसाईयों के गिरजाघर में तथा बौद्धों के मंदिर में जाना पसन्द करुँगा। प्रत्येक धर्म को दूसरे धर्म का आदर करना चाहिए। धर्मों की एकता मानवता की विकास के लिए अवश्यम्भावी है।

धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ विभिन्न धर्मों के प्रति आदर एवं प्रेम के भाव का प्रदर्शन करना है।

मावन की सबसे दुर्बलता है कि वह अपने धर्म को श्रेष्ठ समझता है तथा दूसरे धर्म को हेय की दृष्टि से देखता है। फलतः धर्मों के बीच निरन्तर संघर्ष होते रहते हैं। डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा है ''एक धर्म का जितना विरोधी अन्य धर्म है उतना विरोधी कोई दूसरा नहीं है।''[1] (Nothing is os hotile to religion as other religions) आपस में ऐसा नहीं होना चाहिए। अपने धर्म के प्रति श्रद्धा एवं आस्था रखना सराहनीय है परन्तु दूसरे के धर्म की निन्दा करना उपयुक्त नहीं है। सब धर्मों में एक–दूसरे के प्रति सहने की क्षमता होनी चाहिए। धार्मिक सहिष्णुता में विभिन्न धर्मों के प्रति सहनशीलता के दृष्टिकोण को तथा उदारता की भावना को प्रश्रय देने का आदेश निहित है। धार्मिक सहिष्णुता के विकास से आध्यात्मिक अर्न्तदृष्टि का विकास होता है। धार्मिक सहिष्णुता अपने धर्म के प्रति उदासीनता का पाठ नहीं पढ़ाता, अपितु अपने धर्म के प्रति आदर एवं प्रेम की भावना को प्रश्रय देने का आदेश देता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि धर्मावलम्बी को अपने धर्म की त्रुटियों के प्रति आँख मूँद लेना चाहिए। प्रत्येक धर्मावलम्बी को अपने धर्म को सही परिप्रेक्ष्य में समझने की दिशा में प्रयत्नशील रहना चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता के विकास के लिए मानव को धर्म के मूल तत्वों की सही जानकारी होनी चाहिए। सभी धर्म किसी–न–किसी रुप में सत्य से संबंधित हैं। सभी धर्म मानवीय मूल्यों के संरक्षण पर बल देते हें कोई धर्म मानव और मानव के बीच शत्रुता रखने का आदेश नहीं देता है। सभी धर्मावलम्बी को 'सर्वधर्म समन्वय' की शिक्षा अनिवार्य रुप से दी जानी चाहिए। फलस्वरुप उन्हें अपने धर्मों के प्रति विश्वास जगेगा तथा दूसरे के धर्मों के प्रति आदर के भाव का विकास होगा। महात्मा गांधी ने धार्मिक सहिष्णुता के विकास के लिए धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन पर बल दिया है। साथ ही उन्होंने एक चेतावनी भी दी है कि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते समय उनकेटीकाकार पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि मानव अपने धर्म तथा दूसरे धर्म के धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन ऐसे टीकाकारों की रचनाओं के द्वारा करता है, जिन्हें उन ग्रंथों एवं संबंधित धर्म के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा का भाव हो तब वह धार्मिक सहिष्णुता के विकास में सहायक हो सकता है।

धार्मिक सहिष्णुता के विकास में हिन्दू धर्म की भूमिका सराहनीय हो सकती हे। डॉ. राधाकृष्णन हिन्दू धर्म को 'सर्वधर्म समन्वय' का सुन्दर उदाहरण मानते हैं। हिन्दू धर्म एक ऐसा धर्म है, जिसमें धार्मिक सहनशीलता को संदेश निहित है। हिन्दू धर्म सभी धर्मों के प्रति सहनशीलता की भावना का अपनाकर आदर का पात्र बन गया है। हिन्दू धर्म में हम आध्यात्मिकता की प्रबलता पाते हैं। यही कारण है कि हिन्दू धर्म का आध्यात्मिक दृष्टिकोण उसे सहनशील एवं विश्वव्यापी होने में सक्षम सिद्ध करता है। हिन्दू धर्म में अपने अन्दर विभिन्न प्रकार के विचारों को स्थान दिया है जिसके फलस्वरुप इसका विश्वव्यापी दृष्टिकोण अभिव्यक्त होता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हिन्दू धर्म एक ऐसा धर्म है जिसने सम्पूर्ण विश्व को सहनशीलता का पाठ पढ़ाया है। स्वामी विवेकानन्द की ये पंक्तियां इस संदर्भ में ध्यातव्य हैं – ''मुझे उस धर्म का समर्थक होने का गर्व है जिसने सम्पूर्ण विश्व को सहनशीलता एवं सार्वभौम स्वीकृति को सिखाया है।''[2]

सहनशीलता हिन्दू धर्म की आत्मा हैं। हिन्दू धर्म की मूल विशेषता सहनशीलता को प्रश्रय देना है। विश्व के किसी भी धर्म में हिन्दू धर्म की तरह विभिन्न धर्मों के समर्थकों को हिन्दू धर्म से मार्गदर्शन लेना चाहिए ताकि वे धार्मिक सहिष्णुता को अपनाने में सक्षम हो सके।

भारतीय धार्मिक सहिष्णुता संस्कृत के मूल से ही उत्पन्न दिखाई देता है। वेद का प्रथम उपदेश परस्पर समभाव को उद्‌बोधन करता है बैर नहीं।[3] अथर्ववेद में व्रात्यों के प्रति समादर भाव महनीय है। एक दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति सहिष्णुता प्रकट होती है।[4] महाभारत के अनुसार ब्राह्मण को सर्व धर्म में रति हो –

ब्राह्मणः सर्वधर्मरतिर्भवेदिति।

धार्मिक सहिष्णुतायाः परमोदाहरणं तामिल प्रदेशस्य जंजौर – जनपदस्य कोलंकज – वल्लन्तन–पट्टुग्रामवासिनामल्लाह – मंदिरे पूजा – विधानेषु दृश्यते। वर्णचतुष्टयस्य हिन्दवस्तत्र पूजोत्सवेषु सम्मिलिता भवन्ति। तत्र नास्तीस्लामधर्मानुयायिनां वसतिः। ग्रामप्रधानोऽल्लाह–मन्दिरस्य व्यवस्थां विधत्ते।

-Times of India, date 16.09.82

दूसरा उदाहरण

In Erumili there is also a temple of Vavara, a Muslim devotee of the Lord. Vavara become his devotee after a fierce fight and was appointed his lieutenant by the Lord. Hindus and Muslims join in worshipping in the temple of Vavara, a symbol of Hindu Muslim unity.

-Pyyappam : Lord Ayyapan. P. - 54

अकबर की धार्मिक सहिष्णुता आदर्श के रुप में देदीप्यमान है। वे ईरानराज अब्दुसफरी को पत्र द्वारा प्रतिबोधित करते हैं –

''भाँति–भाँति के धार्मिक सम्प्रदाय दैवी थाती हैं, और खुद परमेश्वर ने ही उन्हें हमारे हाथ में सौंपा है। इसलिए हमें उन सबको मिलाकर एक करना चाहिए।5

कालिदास के कुमारसम्भव में धार्मिक सहिष्णुता का प्रभाव दिखाई देता है। तथाहि –

एकैव मूर्तिर्बिभिदे त्रिधा सा सामान्यमेषा प्रथमावरत्वम्।
विष्णोर्हरस्तस्य हरिः कदाचिद्वेधास्तयोस्तावपि धातुराधौ।
– 7.44

धार्मिक सहिष्णुता की प्राप्ति सरल नहीं है, किन्तु हम धार्मिक सहिष्णुता की प्राप्ति के संदर्भ में उदासीन नहीं हो सकते। धार्मिक सहिष्णुता की प्राप्ति होने से ही मानव धर्म के नाम पर जो संघर्ष एवं हिंसा हो रहे हैं, से बच सकता है। धार्मिक सहिष्णुता की प्राप्ति में कुछ कठिनाइयां हैं जिनका निराकरण आवश्यक है।

(1) धार्मिक कट्टरता का निराकरण – कतिपय धार्मिक व्यक्तियों में कट्टरता की भावना दीखती है। ऐसे लोग अपने धर्म को ही श्रेष्ठ तथा अन्य धर्मों को हीन मानने लगते हैं। ऐसी स्थिति में संकीर्णता एवं संकुचित दृष्टिकोण का उद्भव होता है। परिणामतः मावन की शांति एवं सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। यदि हम धर्म के इतिहास की और अपनी दृष्टि डालें तो हमें विदित होगा कि धर्म–युद्ध का मूल कारण धार्मिक कट्टरता की प्रवृत्ति को प्रश्रय देना रहा है। यह प्रवृत्ति धार्मिक सहिष्णुता के विकास में बाधक है, क्योंकि इस प्रवृत्ति के फलस्वरुप मनुष्य दूसरे धर्म के समर्थकों को सहन नहीं कर पाता है। परिणामतः परस्पर सभी धर्मों के बीव कलह, विवाद, मतभेद, संघर्ष होते रहते हैं। धार्मिक सहिष्णुता में इस संघर्ष को रोकने के लिए विभिन्न धर्मों के प्रति सहनशीलता के दृष्टिकोण को प्रश्रय देने का आदेश निहित है। अतः धार्मिक सहिष्णुता की प्राप्ति हेतु धार्मिक कट्टरता का निराकरण अति आवश्यक है।

(2) सम्प्रदायवादका निराकरण – प्रत्येक धर्म का विभाजन विभिन्न सम्प्रादायों में हुआ है। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के प्रति सहानुभूति नहीं रखते, बल्कि उनके विरुद्ध प्रचार करते हैं। सम्प्रदाय को सत्य माननेवाले धर्म के सार को नहीं पा सकते । परिणामतः धर्मों के बीच नफरत एवं वैमनस्य का भाव प्रस्फुटित होता है। मानव की शांति भंग होती है। इस प्रकार सम्प्रदाय के फलस्वरुप धार्मिक सहिष्णुता के विकास में कठिनाई होती है। अतः धार्मिक सहिष्णुता के विकास के लिए धर्म के सम्प्रदायों का निराकरण अपेक्षित है।

(3) धार्मिक अन्धविश्वासों का निराकरण – प्रत्येक धर्म में कुछ न कुछ धार्मिक अन्धविश्वास रहते हैं। धर्म में कुछ ऐसी प्रथाये एवं मत निहित रहते हैं, यदि इन प्रथाओं एवं प्रचलनों का हम बौद्धिक मूल्यांकन करते हैं तब वे असंगत एवं अमान्य प्रतीत होते हैं। परन्तु धर्मावलम्बियों को उन्हें आँख मूँदकर पालन करने के लिए बाध्य किया जाता है। फलस्वरुप धर्मावलम्बी इन अन्धविश्वासों को प्रश्रय देने लगता है, क्योंकि ये उसकी धार्मिक भावना को सजीवता प्रदान करते हैं। मानव धार्मिक सहिष्णुता को अपनाने में तभी सक्षम हो सकता है जब उसे धार्मिक अन्धविश्वासों से छुटकारा मिले। अतः धार्मिक सहिष्णुता की प्राप्ति हेतु धार्मिक अन्धविश्वासों को तिलांजलि देने की आवश्यकता है।

अन्त में कहना चाहूँगी कि आज की आवश्यकता है – सर्वधर्म सम्मेलन। भारत में सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। ऐसे आयोजन से एक–दूसरे के धर्म को जानने–समझने का मौका मिलेगा। सम्मेलन आपसी प्रेम को बढ़ाता है। इस पहल को आत्मसात् करना चाहिए। सर्वधर्म सम्मेलन का भव्य आयोजन दिल और दिमाग को जोड़ने का काम करता है।

धार्मिक सद्भाव और सहिष्णुता भारत की माटी में रची–बसी है। यहाँ के लोग 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना.....' में विश्वास करते हैं। जब भी मौका आया भारतवासियों ने धार्मिक सद्भाव की मशाला को मजबूती से पकड़े रख और देश–दुनिया को मानवता और भाईचारे का संदेश दिया। हम जिस धर्म का पालन कर रहे हैं उस पर अवश्य चलें। सभी धर्म शांति सद्भाव का ही संदेश देते हैं। जो शांति का कार्य करते हैं वे धन्य हैं। अपने धर्म को श्रेष्ठ मानना धर्म नहीं है। आदिकाल में सद्भाव और सहयोग के लिए धर्म की स्थापना हुई। अपने पड़ोसी को भी दूसरा न समझें। उससे भी पूरा स्नेह रखें। हम इंसान से मोहब्बत करें इंसान हमसे मोहब्बत करेगा। आज सूई–धागे की आवश्यकता है जो जोड़ता है, कैंची की आवश्यकता नहीं जो अलग करता है। प्रत्येक प्राणी से बच्चों की तरह स्नेह करें और एक दूसरे से प्यार करें।

टिप्पणियां

1. S. Radhakrishan : Speeches and writings - Combined Edition 1952; 59:305.
2. I am proud.....to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance.
   - Vivekanand Swami - Complete works of Swami Vivekanand - 1, 5.
3. एकस्मात् पुरुषाद् ब्रह्मणो वा जगतो विश्वेषामुत्पत्तिरिति
   –ऋग्वेद 1.11.51
4. अथर्ववेद – 15.11.13
5. दिनकरः संस्कृति के चार अध्याय, पृ० – 392

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय संसकृति सौरभम्
   लेखक – प्रो. रामजी उपाध्याय
   शारदा संस्कृत संस्थान
   सी–27/59 जगतगंज, वाराणसी
2. धर्म–दर्शन की रुपरेखा
   डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा
   मोतीलाल बनारसी प्रसाद सिन्हा
   बंगलो रोड, दिल्ली–110006
3. सर्वधर्मकोश
   सम्पादक – डॉ. रामस्वरुप 'रसिकेश'
   चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
   38 यू.ए., बंगलो रोड, जवाहर नगर
   दिल्ली – 110006
4. संस्कृत–हिन्दी कोश
   वामन शिवराम आप्टे
   मोतीलाल बनारसी दास
5. भारतीय दर्शन की अवधारणाएं
   सुनील चन्द्र मिश्र
   जानकी प्रकाशन
   पटना, नई दिल्ली
6. धर्म जनकोष
   अरुण
   प्रकाशक – कैलाश मित्थल
   अनु बुक्स, शिवाजी रोड, मेरठ
7. कालिदास – ग्रंथावली
   आचार्य पं. सीताराम चतुर्वेदी
   उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
   लखनऊ